पेशेवर वर्ग का सामाजिक संस्थाओं के प्रति अभिवृत्तात्मक उन्मेष

डॉ0 आनन्द सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर
समाजशास्त्र विभाग
ईश्वर शरण डिग्री कालेज,
इलाहाबाद

भारतीय समाज व्यवस्था की कुछ ऐसी विशेषता रही है, जिसमें परम्परा का मोह सदैव से व्याप्त रहा है, परन्तु आधुनिकता को अपनाने की अभिलाषा भी कम दृढ़ नहीं रही है। विज्ञान एवं प्राविधिकी के क्षेत्र में होने वाले विभिन्न प्रकार के गवेषणाओं ने भारतीय समाज के सामने परिवर्तन से जुड़े हुए अनेक महत्त्वपूर्ण कदम उठाने के लिए पृष्ठभूमि का निर्माण किया है। परन्तु इनकी सार्थकता सामान्य जन की अपेक्षाकृत उस पेशेवर वर्ग से है जो परम्परा एवं आधुनिकता की बीच अपने कार्य प्रणाली को प्रतिपादित करने के लिए विवश हैं। इस प्रकार के पेशेवर वर्ग की स्थिति अनेक प्रकार के उभय संकट का सामना करती है।

आधुनिकता की प्रक्रिया हमारे देश में अपनी जड़ें जमा चुकी हैं। इस प्रक्रिया को त्वरित गति प्रदान करने में भारत के लिए जो संदर्भ देश बनता है वह पश्चिमी देश ही है। पश्चिमी देशों के अनुभव एवं महत्त्वपूर्ण निर्देशों का अनुसरण करते हुए हम अपने देश में परिवर्तन की बात अपने प्रतिमानों, आदर्शों एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अन्तर्गत ही करने का प्रयास करते हैं। साधारणतया हम पश्चिमी देशों के परिवर्तन से सम्बन्धित प्रारूप को अपनाने का प्रयास करते हैं। यह सम्भव नहीं है कि पश्चिमी देशों के इन प्रारूपों का अनुसरण करने से वही परिणाम प्राप्त हो जो पश्चिमी देशों को प्राप्त हुए थे। इस प्रकार स्पष्ट है कि परिवर्तन की प्रक्रियाओं को पश्चिमी देशों के माडल में अपने यहाँ लागू तो किया जाय, लेकिन उसी प्रकार के परिणामों की अपेक्षा न की जाय। इस संदर्भ में यह ज्ञान करना आवश्यक है कि किस सीमा तक पश्चिम का आधुनिकतावाद अपने सांस्कृतिक परिवेश में भारतीय स्थितियों को विभिन्न क्षेत्रों में लगे हुए पेशेवर वर्ग के माध्यम से प्रभावित करने का प्रयास करती है।

विगत वर्षों में अनेक समाज वैज्ञानिकों ने पेशवर वर्ग पर गहन वैज्ञानिक अध्ययन किया है (उसीम[1] 1955, बेरेमैन[2] 1960, कपाड़िया[3] 1966, शील्स[4] 1972, फोस्टर[5] 1973, दूबे[6] 1975, पैरी एवं पैरी[7] 1976, ऊमन[8] 1978, श्रीवास्वव[9] 1978, कैनन[10] 1978, लाल[11] 1988, आडवानी[12] 1988 आदि) परन्तु पेशेवर वर्ग से सम्बन्धित बहुत पक्ष अभी भी अन्वेषित नहीं किये गये हैं।

अध्ययन का उद्देश्य एवं विधि

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य पश्चिमी देशों में प्रशिक्षित अथवा उच्च शिक्षा प्राप्त चिकित्सक एवं शिक्षक पेशेवर वर्ग के अभिवृत्तात्मक उन्मेष का विश्लेषण करना है। अध्ययन में यह ज्ञान करने का प्रयास किया गया है कि पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के परिणामस्वरूप जाति, विवाह, धर्म आदि जैसे सामाजिक संस्थाओं के प्रति उनके अभिवृत्तात्मक उन्मेष में किस प्रकार का परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। इस हेतु अध्ययन में समग्र के रूप में वाराणसी के शिक्षण संस्थाओं एवं चिकित्सालयों के कार्यरत ऐसे शिक्षक एवं चिकित्सक हैं जिन्हें अध्ययन या प्रशिक्षण के लिए विदेश में जाने का अवसर प्राप्त हुआ है। इस समग्र में से 100 शिक्षक एवं 100 चिकित्सक का चयन संगणना पद्धति के आधार पर किया गया। अध्ययन में वर्णनात्मक शोध प्रारूप का अनुसरण किया गया है। तथ्य संकलन अनुसूची के माध्यम से साक्षात्कार प्रविधि द्वारा किया गया। तत्पश्चात तथ्यों को वर्गीकृत एवं सारणीबद्ध करते हुए विशेषित किया गया और सामान्य निष्कर्ष प्रतिदित किये गये।

उपलब्धियाँ

अध्ययन से सम्बन्धित तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि उत्तरदाताओं का विदेश जाने से पहले जाति व्यवस्था के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण नहीं था, परन्तु 33.00 प्रतिशत चिकित्सकों एवं 41.00 प्रतिशत शिक्षकों ने इसके संदर्भ में सार्थक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। अधिकांश उत्तरदाताओं ने बताया कि उन्हें जीवन के प्रारम्भिक दिनों में अपने बड़ों से दूसरे जाति के लोगों के साथ मित्रता, दूसरे जाति के मित्रों को अपने यहाँ बुलाने एवं दूसरे जाति के लोगों के साथ खान–पान आदि के संदर्भ में सुझाव प्राप्त हुआ था।

अपनी ही जाति में विवाह की आवश्यकता के संदर्भ में 34.00 प्रतिशत चिकित्सकों एवं 30.00 प्रतिशत शिक्षकों ने सहमति व्यक्त की है, परन्तु अधिकांश उत्तरदाताओं ने अपनी स्थिति स्पष्ट नहीं की है। अधिकांश चिकित्सकों एवं शिक्षकों ने बताया कि वे विदेश जाने से पहले भारतीय समाज में जाति विभेदीकरण से सम्बन्धित मूल्यों को नहीं स्वीकार करना चाहते थे। विदेश से लौटने के उपरान्त जाति विभेदीकरण से सम्बन्धित मूल्यों को स्वीकार करने हेतु उत्तरदाताओं के दृष्टिकोण में नकारात्मक उन्मेष का और अधिक प्रसार हुआ है।

भारतीय जाति व्यवस्था से सम्बन्धित विचारों में विदेश प्रवास के परिणामस्वरूप परिवर्तन के संदर्भ में अधिकांश चिकित्सकों एवं शिक्षकों का कहना है कि उनके विचारों में कोई परिवर्तन नहीं आया है, परन्तु 33.00 प्रतिशत चिकित्सकों एवं 31.00 प्रतिशत शिक्षकों ने इस तथ्य को स्वीकार किया है कि विदेश में

प्रवास के अनन्तर जाति व्यवस्था से सम्बन्धित विचारों में कुछ परिवर्तन हुए हैं। इस परिवर्तन के फलस्वरूप उनके विचारों में कुछ उदारता का समावेश हुआ है जबकि कुछ उत्तरदाताओं के अनुसार उनके विचारों को दृढ़ता प्राप्त हुई है।

पश्चिमी देशो में विवाह प्रारूप के संदर्भ में चिकित्सकों एवं शिक्षकों ने बताया कि जीवन साथी के चुनाव में युवा स्वयं पहल करते हैं तथा पति–पत्नी की जगह जीवन साथी की अवधारणा प्रबल है। विवाह में माता–पिता का योगदान नहीं के बराबर होता है। कुछ विशेष परिस्थितियों में ही माता–पिता से राय ली जाती है। पश्चिमी देशों में व्याप्त तलाक के संदर्भ में शिक्षकों एवं चिकित्सकों का कहना है कि यह अधिकतर जल्दबाजी एवं एक–दूसरे को समझने के अभाव के कारण होता है। इससे उनका जीवन नारकीय हो जाता है। यह अवांछनीय एवं कटुतापूर्ण है। अधिकांश उत्तरदाताओं ने भारत में तलाक को सामाजिक स्वीकृति प्रदान करने हेतु अपना नकारात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है कहा कि इससे बच्चों का भविष्य बिगड़ता है, मानसिक बेचैनी बढ़ती है, साथ ही यह भारतीय सामाजिक पृष्ठभूमि में निन्दनीय है। परन्तु 40.00 प्रतिशत चिकित्सक एवं 34.00 प्रतिशत शिक्षक उत्तरदाता भारत में तलाक को सामाजिक स्वीकृति प्रदान करने के पक्षधर हैं उनका विचार है कि यदि वैवाहिक जीवन असंतुलित हो रहा है तो तलाक को सामाजिक स्वीकृति प्रदान करनी चाहिए तथा परम्पराओं को परिस्थिति विशेष में परिमार्जित करने का प्रयास करना चाहिए।

अधिकतर शिक्षक एवं चिकित्सक यह सोचते हैं कि भारतीय विवाह बहुत अधिक धार्मिक रीति–रिवाजों एवं संस्कारों से भरा हुआ है। वे नहीं चाहते हैं कि भारतीय विवाह बहुत अधिक धार्मिक रीति–रिवाजों एवं संस्कारों से भरा रहे। सर्वाधिक उत्तरदाताओं का विचार है कि विवाह पर बहुत अधिक धन नहीं खर्च करना चाहिए। अधिकांश उत्तरदाताओं ने कहा कि वे अपने लड़के–लड़कियों के विवाह पर बहुत अधिक मात्रा में धन खर्च करने के पक्षधर नहीं हैं, क्योंकि इससे धन का दुरूपयोग होता है। इस धन को नव–दम्पत्ति के भविष्य के लिए संजोया जा सकता है, परन्तु 20.00 प्रतिशत चिकित्सक 10.00 प्रतिशत शिक्षक अपने लड़के–लड़कियों के विवाह पर धन खर्च करने की इच्छा रखते हैं। वे कहते हैं कि प्रस्थिति को बनाये रखने के लिए तथा परम्परागत लोक मर्यादा को जीवित रखने के लिए आवश्यक है।

अधिकांश शिक्षक एवं चिकित्सक ने अपने जीवन–साथी के चुनाव, जन्म–कुण्डली आदि की जाँच–पड़ताल, शुभ दिन या समय, संस्कार तथा दहेज आदि के संदर्भ में अपना परिवर्तनोन्मुख दृष्टिकोण

प्रस्तुत किया है। उत्तरदाताओं ने विवाह से सम्बन्धित विविध पक्षों में परिवर्तनोन्मुख दृष्टिकोण अपने विदेश प्रवास का परिणाम नहीं माना है, परन्तु 19.00 प्रतिशत चिकित्सक एवं 14.00 प्रतिशत शिक्षक उत्तरदाता इसे विदेश प्रवास का प्रतिफल मानते हैं।

शिक्षकों एवं चिकित्सकों के धार्मिक उन्मेष को विश्लेषित करने के प्रयास में ज्ञात हुआ कि अधिकांश उत्तरदाताओं का मानना है कि पश्चिमी देशवासियों में धर्म के प्रति वह आस्था नहीं है जिसकी अपेक्षा की जाती है। अधिकतर शिक्षकों एवं चिकित्सकों ने अपने अध्यवसाय को जीवन में सफलता का प्रमुख कारण माना है। प्रत्येक जाति व शैक्षणिक स्थिति के आधार पर अधिकांश उत्तरदाताओं को यही दृष्टिकोण परिलक्षित होता है। अधिकांश उत्तरदाताओं ने बताया कि वे धार्मिक क्रियाकलापों का अनुसरण इसलिए नहीं करते कि उनका दूसरा जीवन बहुत सुखमय हो, परन्तु 47.00 प्रतिशत चिकित्सकों एवं 37.00 प्रतिशत शिक्षकों ने इस संदर्भ में अपनी स्वीकारोक्ति व्यक्त की है। अधिकतर उत्तरदाताओं ने अपने वर्तमान जीवन को पूर्व जीवन का परिणाम नहीं माना है।

अधिकांश शिक्षकों एवं चिकित्सकों का कहना है कि भारतीय जीवन में पश्चिमी समाज की तुलना में धर्म की भूमिका अधिक महत्त्वपूर्ण होती है तथा वे ऐसा सोचते हैं कि पश्चिमी समाज इसलिए बहुत तेजी से प्रगति कर रहे हैं, क्योंकि विज्ञान की अपेक्षाकृत धर्म की भूमिका उनके जीवन में कम महत्त्वपूर्ण होती है। अपने वैज्ञानिक ज्ञान एवं धार्मिक विश्वास के बीच टकराव की स्थिति के संदर्भ में अधिकांश उत्तरदाताओं ने नकारात्मक अभिव्यक्ति की है। परन्तु 33.00 प्रतिशत चिकित्सक एवं 21.00 प्रतिशत शिक्षक टकराव की स्थिति महसूस करते हैं उनका ऐसा अभिमत है कि बहुत आडम्बर देखने पर, हमेशा धर्म के द्वारा गतिरोध उत्पन्न करने पर तथा परम्परा एवं आदर्शों को आवश्यकता से अधिक महत्त्व प्रदान करने पर यह स्थिति उत्पन्न होती है।

विदेश जाने के कारण शिक्षकों एवं चिकित्सकों के धार्मिक विश्वास में कुछ परिवर्तन एवं लचीलापन दृष्टिगोचर हुआ है, परन्तु 53.00 प्रतिशत चिकित्सकों एवं 65.00 प्रतिशत शिक्षकों के विचारनुसार उनके धार्मिक उन्मेष को कुछ और सुदृढ़ता प्राप्त हुई है। चिकित्सकों एवं शिक्षकों ने धार्मिक जीवन में तार्किकता का समावेश, धर्म का सामुदायिक जीवन के उत्थान में अधिक उपयोग एवं धर्मनिरपेक्षता को पश्चिमी देशों में रहने वालों के धार्मिक जीवन का प्रशंसनीय पक्ष बताया है और यह स्वीकार किया कि वे उससे प्रभावित भी हुए हैं।

निष्कर्ष

तथ्यों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान अध्ययन अभिवृत्ति एवं व्यवहार शैली के क्षेत्र में सीमित परिवर्तन के नियम को पुष्ट करता है। भारतीय चिकित्सकों एवं शिक्षकों का यह वर्ग परम्परागत भारतीय जीवन शैली के अधिक निकट है न कि पाश्चात्य जीवन शैली और अभिवृत्ति का प्रतिरूप है। सांस्कृतिक मूल्यों और संस्थागत सामाजिक व्यवहार के क्षेत्र में यह पेशेवर वर्ग भारतीय के अधिक निकट है।

सन्दर्भ

1. Useem, John & Useem, R.H., The Western Educated Man in India : A Study of His Social Role and Influence, New York, Dryden Press Inc., 1955.
2. Berreman, G.D., Caste in India and United State, American Journal of Sociology; Vol. XXVI. 2 September, 1960.
3. Kapadia, K.M., Marriage and Family in India, Calcutta, Oxford University Press, 1966.
4. Shile, Edward, The Intellectuals and the powers and other Essays, Chicago, University of Chicago press, 1972.
5. Foster, Jeorge M., Traditional Societies and Technological Change, Bombay, Allied Publisher Pvt, Ltd., 1973.
6. Dubey, S.M., Social Mobility among the Profession, Bombay, Popular Prakashan, 1975.
7. Parry N. and Parry J., The Rise of Medical Profession, Landon Croom Helm, 1976.
8. Oomman, T.K., Doctors and Nurses, Study in Occupational Role Structure, Delhi, The Macmillan company of India Ltd., 1978.
9. Srivastava, H.C., Intellectuals in Contemporary India, New Delhi, Heritage Publisher, 1978.
10. Kannan, C.T., Cultural Adoptation of Assian Immigrants-First and Second Generations, Bombay, India Printing works, 1978.
11. Lal, S.K. (Eds.) and others, Sociology of the Professions, Delhi, Gain Publishing House, 1988.
12. Advani, Mohan, Pattern of Professional Process-Socioloy of the Professions (Eds) by Lal, S.K., Delhi, Gain Publishing House, 1988.